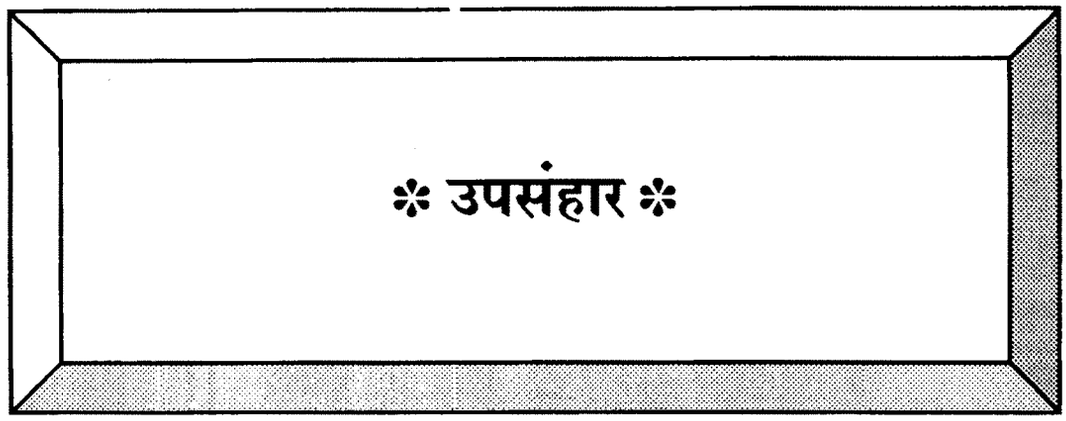

❊ उपसंहार ❊

उपसंहार

कवयित्री सुनीता जैन बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कवयित्री है। उनका जन्म 13 जुलाई, 1941 ई. को अम्बाला में एक दिगम्भर जैन परिवार में हुआ। उनके पिताजी न्यायाधीश थे। उनका पारिवारिक माहौल संपन्नता से युक्त था। उनकी माँ एक गृहिणी थी। कवयित्री और उनकी माँ में एक आत्मीयता थी। इसलिए अपनी प्रतिभा संपन्न बुद्धि से उन्होंने अनेक कविताओं का सृजन किया। बचपन में कवयित्री बहुत खेल भी खेलती थी। ज्यादा मात्रा में वे बेड़मिंटन खेलती थी। बेड़मिंटन में उन्होंने पुरस्कार भी जीते हैं।

कवयित्री ने युनायटेड स्टेट अमरिका से अपनी शिक्षा प्राप्त की है। वे आई.आई.टी. नई दिल्ली के मानविकी एवम् समाज विज्ञान विभाग में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष भी रही हैं। उनका अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं पर प्रभुत्व रहा हैं। उन्होंने कविता से अपने लेखन की शुरूवात की थी। उनके हिंदी में तैंतीस कवितासंग्रह और अंग्रेजी में आठ कवितासंग्रह प्रकाशित हुए हैं। कविताओं के साथ ही उन्होंने गद्य पर भी अपनी लेखनी चलाई है। उनके पाँच उपन्यास तथा तीन कहानीसंग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

आधुनिक हिंदी कविता का प्रारंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है। आधुनिक हिंदी कविता की विकास प्रक्रिया के चरण हैं, भारतेन्दु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता, छायावादी कविता, उत्तर छायावादी कविता, प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नई कविता और समकालीन कविता आधुनिक हिंदी कविता की विकास प्रक्रिया के हर चरण में उल्लेखनीय योगदान देनेवाली कुछ ख्यात कवयित्रियों के नाम हैं, प्रताप कुँवरिबाई, जुगलप्रिया, सरस्वती देवी, चन्द्रकलाबाई, तोरनदेवी शुक्ल 'लली', श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, विद्यावती 'कोकिल', शकुन्तला माथुर, कीर्ति चौधरी, सुमन राजे, इन्दु जैन, स्नेहमयी चौधरी, सुनीता जैन, मणिका मोहिनी, अनामिका आदि अनेक।

भारतेन्दु युगीन कविता से लेकर समकालीन कविता तक बहुत सी कवयित्रियों ने स्त्री के विविध रूपों का चित्रण किया है। परंतु स्त्री के 'माँ' रूप पर दो-तीन ही कवयित्रियों ने प्रकाश डाला है। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण नाम कवयित्री

सुनीता जैन का रहा है। कवयित्री 'माँ' के साथ बँध चुकी है। 'माँ' को और माँ की हर अवस्था को कवयित्री के लिए भूलना असंभव है। कवयित्री को माँ की यादें सपने में भी सताती है। माँ और कवयित्री के बीच जो प्रेम है उसके कारण उन्होंने 'माँ' पर ज्यादा मात्रा में कविताएँ लिखकर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इसलिए आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों में कवयित्री सुनीता जैन का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है।

कवयित्री सुनीता जैन की कविताओं का केंद्रबिंदू उनकी अपनी 'माँ' है। उन्होंने अपनी 'माँ' से दो मूल्यों को लिया हैं वे हैं, कष्ट करना और हमेशा सच बोलना। उनकी लेखनी पर भी इन दो मूल्यों का प्रभाव दिखाई देता है। कवयित्री की लेखन के साथ अन्य रूचियाँ ये भी हैं, वृक्षों से बाते करते रहना, घर को सँवार कर रखना, हर तरह के पेड़ पौधे उगाना और बहुत देर तक मौन रहना। कवयित्री अध्यापन पेशे से भी जुड़ी रही है। उनके व्यक्तित्व की अन्य विशेषताएँ ये भी हैं, संवेदनशीलता, उदारता, भावुकता, परिश्रमशीलता आदि अनेक। उनकी कविताओं में उनकी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह दिखाई देती हैं कि उन्होंने अपनी 'माँ' के जीवित होते हुए भी 'माँ' पर कविताएँ लिखी हैं और 'माँ' की मृत्यु के बाद भी 'माँ' पर कविताएँ लिखकर दोनों के संबंधों को और भी गहरा और दृढ़ बनाया है।

कवयित्री सुनीता जैन ने अपनी सभी कविताओं में मानवीयता का यथार्थ चित्रण किया है। उनमें महत्त्वपूर्ण है 'माँ' विषयक संवेद्यता। उनकी लगभग सभी कविताओं में 'माँ' विषयक संवेद्यता दिखाई देती है। उनकी कविताओं में उपमाएँ, बिम्ब और प्रतीकों का चित्रण भी हुआ है। कवयित्री सुनीता जैन के 'माँ' की कई विशेषताएँ हैं, औदात्य, परिवार से बिछुडने की घबराहट, काम-काज में लीनता, आत्मीयता आदि अनेक। उनकी कविताओं के अन्य विशेष ये भी हैं, स्त्री जीवन की व्यथा, चिड़ियों के माध्यम से मानव के संघर्ष भरे जीवन की व्यथा, प्राकृतिक सौंदर्य, सामाजिक व्यवस्था के प्रति नैराश्य, महानगर में रहनेवाले लोगों की असंवेदनशीलता, मानवीयता, नारी चित्रण, भूख, महामारी, बेकारी का चित्रण, परमात्मा का चित्रण, प्रकृति-चित्रण, पारिवारिक चित्रण, आम लोगों के दुःख,दर्द का चित्रण, जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण, प्रेम वर्णन, स्त्री-पुरूषों के संबंधों का चित्रण, राधा-कृष्ण का प्रणय चित्रण आदि अनेक।

कवयित्री सुनीता जैन के जीवन में अकेलेपन का प्रभाव भी दिखाई देता है। क्योंकि कवयित्री विवाह के बाद विदेश गयी और उनका ज्यादा मात्रा में किसी से संवाद नहीं रहा। कवयित्री सुनीता जैन कई बार विदेश में रहने के बाद भी अपने भारतीय संस्कारों को कभी भी नहीं भूल सकी। उनकी कविताओं में भारतीय परिवार व्यवस्था का चित्रण भी दिखाई देता है।

कवयित्री सुनीता जैन की अविरल कवितासंग्रहों का महत्त्वपूर्ण सोपान उनकी 'माँ' विषयक कविताएँ है। उनका 'माँ' और 'बेटी' का रिश्ता दृढ़विश्वासयुक्त है। 'माँ' को गुरू से भी श्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। 'माँ' बच्चे के जीवन को प्रेरणा देती है। उसका पहला गुरू भी 'माँ' को ही माना जाता है। स्त्री के माता,पत्नी, बहन, नानी, प्रेयसी आदि अनेक रूप होते हैं। परंतु 'स्त्री' का सर्वोच्च रूप 'माँ' को ही माना जाता है। माँ के बिना कोई भी इन्सान इस संसार को देख ही नहीं सकता। 'स्त्री' को प्रकृति के द्वारा मिली हुई देन है, 'मातृत्व'। 'माँ' त्यागी और निस्वार्थी होती है। वह बच्चे को जन्म देने के साथ-साथ उसका निर्माण भी करती है। अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए माँ सतत कार्यरत रहती है।

'माँ' निस्वार्थी होने के कारण बच्चे का और 'माँ का रिश्ता दृढ़ और गहरा बन जाता है। मुस्कुराते हुए बच्चे और अच्छे दिखाई देनेवाले बच्चों को तो सब लोग प्यार करते हैं। परंतु काला, लूला या रोता हुआ कैसा भी बच्चा क्यों ना हो केवल एक माँ को ही प्यारा लगता है। माँ निस्वार्थी होती है और केवल देना ही जानती है। माँ और बच्चे के बीच एक स्नेहस्रोत होता है। जिसे माँ जीवित रखती है। अपने बच्चों के भविष्य की चिंता माँ को ही सताती रहती है। लड़की के शादी की चिंता ज्यादा मात्रा में माँ को ही रहती है।

'माँ' अपने बच्चों पर दु:ख की आँच तक नहीं पड़ने देती। माँ हमेशा अपनी संतान की सुख में अपना सुख मान लेती है। 'माँ' के भी कई रूप दिखाई देते हैं, सौतेली माँ, धरती को भी माँ कहा जाता है, देवियों के कई रूपों को भी माँ कहते हैं, मेहनती माँ, ममतामयी माँ आदि अनेक। माँ का प्यार आकाश की ऊँचाई जैसा और सागर की गहराई जैसा असीम होता है। माँ के ममता की तुलना किसी के भी साथ नहीं हो सकती। इसलिए माँ को महान माना जाता है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

'माँ' में दया, क्षमा, ममता, वात्सल्य आदि अनेक रूप दिखाई देते है। अपने बच्चों की मंगल कामना के लिए 'माँ' हमेशा प्रार्थना करती है। अगर किसी भी अमीर व्यक्ति को माँ नहीं हो तो उसे भिखारी समझा जाता है। सबसे धनवान व्यक्ति वही होता है जिसके पास एक 'माँ' होती है। संसार में दुबारा मिलनेवाली चीजे बहुत है। परंतु एक 'माँ' ही दुबारा नहीं मिल सकती। माँ का महत्त्व अवर्णनीय है। उसे बताना भी असंभव है।

कवयित्री सुनीता जैन ने माँ संबंधी बहुत कवितासंग्रहों का निर्माण किया है और समकालीन कवयित्रियों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कवयित्री सुनीता जैन की कविताओं के कई वैशिष्टय दिखाई देते हैं, सहजता से युक्त कविताएँ, तीव्र भावावेग से युक्त, प्रेम और आस्था आदि अनेक। कवयित्री सुनीता जैन ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है यह उनका सबसे महत्त्वपूर्ण वैशिष्टय है। कवयित्री माँ की स्मृतियों को खोना नहीं चाहती। इसलिए उन्होंने माँ के स्मृतिबिम्बों को कविताओं में चित्रित किया हैं।

कवयित्री सुनीता जैन ने 'माँ' विषयक दो तरह की अभिव्यक्ति की है। एक में कवयित्री ने अपनी माँ संबंधी अभिव्यक्ति की है और दूसरी अभिव्यक्ति में दूसरी औरतें जो माँ हैं। कवयित्री की अपनी माँ संबंधी अभिव्यक्ति में आत्मीयता, औदात्य, सहनशील व्यक्तित्व, स्मृति में बसनेवाली, पीड़ा में जीवन व्यथित करनेवाली, सपनों से गुजारा करनेवाली, माँ के जीवन का यथार्थ आदि अनेक अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती है। कवयित्री की दूसरी अभिव्यक्ति में दूसरी औरतें जो माँ हो सकती हैं संबंधी अभिव्यक्ति में मजबूर माँ, बेटे के प्यार से बँधी माँएँ हैं। हर स्त्री जो 'माँ' है के प्रति कवयित्री को लगाव है। इसलिए उन्होंने 'माँ' के माध्यम से स्त्री जीवन की व्यथा को वाणी दी है।

कवयित्री तन,मन से अपनी माँ के साथ जुड़ी है। उसके लिए माँ का न होना जीवन में सभी रास्ते बंद होने जैसा है। माँ के न होने से कवयित्री अपने आपको अधूरा महसूस करती है। कवयित्री की माँ के बारे में जो सोच है उसे उसने सहजता से कविता में चित्रबद्ध किया है। सहजता और सरलता से अमजी उनकी कविताएँ प्राणवान लगती हैं। जिस भी वक्त कवयित्री को माँ की याद सताती है तब

वह माँ की तस्वीर लेकर रोने लगती है। वह कहती है कि मैं और माँ शरीर से जरूर अलग-अलग हैं। परंतु मन से एक ही है। इसलिए हम दोनों एक-दुसरे से अलग हो ही नहीं सकते।

अब कवयित्री सुनीता जैन की माँ जीवित नहीं है। परंतु माँ की यादों को उन्होंने जीवित रखा हैं। कवयित्री के कथ्य में वैविध्य हैं। उन्होंने कविताओं में मातृत्व चेतना का वर्णन किया है। 'माँ' विषयक की अभिव्यक्ति उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू है। उनकी माँ संबंधी लिखी कविताओं को पढ़कर एक प्रकार की आत्म-तृप्ति का अहसास मिलता है। इसलिए उनकी कविताएँ हिंदी साहित्य को दी हुई एक अनमोल देन हैं।

कवयित्री सुनीता जैन की कविताओं को पढ़ने के बाद वे एक अच्छी साहित्यकार, कहानीकार, उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आती हैं। कवयित्री सुनीता जैन का समकालीन कविता के दौर में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

-